Ext. Bulletin No_ RPCAU/2025/0116

भाकृअनुप
ICAR

कृषि विज्ञान केन्द्र

हरिहरपुर, वैशाली

के बढ़ते कदम....

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूसा, समस्तीपुर (बिहार)

भाकृअनुप–कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान पटना जोन–IV

मुख्य संरक्षक

डॉ. पी. एस. पाण्डेय

माननीय कुलपति
डॉ. रा. प्र. के. कृ. वि. पूसा,
समस्तीपुर, बिहार

संरक्षक

डॉ. रत्नेश कुमार झा

निदेशक प्रसार शिक्षा
डॉ. रा. प्र. के. कृ. वि. पूसा,
समस्तीपुर, बिहार

संपादक

डॉ. अनिल कुमार सिंह

वरीय वैज्ञानिक एंव प्रधान
कृषि विज्ञान केन्द्र, हरिहरपुर

संपादकगण

डॉ. कविता वर्मा

विषय वस्तु विशेषज्ञ
गृह विज्ञान

ई. कुमारी नम्रता

विषय वस्तु विशेषज्ञ
कृषि अभियंत्रण

डॉ. जोनाह दाखो

विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान)

सहयोगीगण

इषिता सिंह, कार्यक्रम सहायक (कम्प्युटर)
रवि कुमार, आशुलिपिक
ऋचा श्रीवास्तव, सहायक

डॉ. पी.एस. पाण्डेय
कुलपति
डॉ. रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर

कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली का मुख्य उद्देश्य जिले के किसानों को प्रोत्साहित करना, मार्गदर्शन देना एवं उनको स्वावलंबी बनाने हेतु बेरोजगार, ग्रामीण युवकों, ग्रामीण महिलाओं, किसानों एवं प्रसार कार्यकर्त्ताओं को समय-समय पर विभिन्न विषयों जैसे-मशरूम उत्पादन, केला रेशा निष्कर्षण, कृषि यांत्रिकरण, प्राकृतिक खेती, बागवानी, बटेर पालन, मधुमक्खी पालन एवं वर्मीकम्पोस्ट पर प्रशिक्षण देना है। केन्द्र के द्वारा विभिन्न कृषि संबंधित आधुनिक तकनीकियों का ऑन फार्म ट्रायल एवं अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण के माध्यम से किसानों तक पहुँचाया जाता है।

परिसर एवं किसानों के प्रक्षेत्र पर इन गतिविधियों को निष्पादन कर उनकी आमदनी में बढ़ोतरी लाई जाती है। केन्द्र द्वारा फलों के विभिन्न प्रजाति के पौधे, सजावटी एवं औषधीय पौधा सामग्री किसानों को उपलब्ध करवाता जाता है। केन्द्र द्वारा विभिन्न परियोजनाओं जैसे- आर्या परियोजना, अनुसूचित जाति उपयोजना, सामुदायिक अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण, नारी परियोजना, सीड हब, जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम इत्यादि के माध्यम से किसानों के दिन प्रतिदिन की समस्याओं को संदर्भित किया जाता है। विभिन्न पत्रिकाओं जैसे बुकलेट, फोल्डर इत्यादि के माध्यम से किसानों तक तकनीकी सूचनाओं को पहुँचाया जाता है। इस बुकलेट के माध्यम से उन्नत एवं महत्वाकांक्षी किसानों को केन्द्र पर होने वाले गतिविधियों के विषय में उचित जानकारी पहुँचाने हेतु प्रसार निर्देशालय के तरफ से केन्द्र के सभी कर्मियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

डॉ. रत्नेश कुमार झा
निदेशक, प्रसार शिक्षा
डॉ. रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर

कृषि के क्षेत्र में प्रतिदिन नई-नई तकनीकों का विकास किया जाता है तथा इन्हें सीधे किसानों तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा किया जा रहा है। हाजीपुर प्रखण्ड स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा केले के थम्ब से रेशा निकालकर हस्तकला निर्माण एवं उससे संबंधित विषयों पर उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। कृषि क्षेत्र में उद्यमिता विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ग्रामीण युवाओं, किसानों एवं महिलाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन तथा ऑन फार्म ट्रायल का नियमित आयोजन किया जाता है। कृषक उत्पादक संगठनों के माध्यम से शहद उत्पादन एवं उसके विपणन की व्यवस्था सुदृढ़ की गई है, जबकि मशरूम उत्पादन कृषकों की आजीविका सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

कृषि संबंधी उपयोगी सूचनाएँ एवं नवीनतम तकनीकी जानकारियाँ किसानों तक पहुँचाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र के बढ़ते कदम का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को इस सराहनीय पहल हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

डॉ. अनिल कुमार सिंह
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृ० वि० के०, वैशाली

भारत सरकार की कृषि विज्ञान केन्द्र पहल का उद्देश्य है, कृषि विज्ञान को आपके खेत तक पहुँचाना और खेती को स्वावलंबन, लाभदायक एवं टिकाऊ बनाना। इसी की दिशा में 08 मार्च 1997 को हरिहरपुर, वैशाली में हमारा केंद्र शुरू हुआ, जो राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा से जुड़ा है। कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली (हरिहरपुर) के प्रमुख कार्य क्षेत्र हैं, प्रशिक्षण और क्षमता विकास इसमें मशरूम उत्पादन, मधु एवं बटेर पालन, मुर्गी पालन, गौ पालन, खाद्य प्रसंस्करण, बागवानी, सिलाई-कढ़ाई, बांधिनी आदि षामिल हैं, ताकि किसान, युवा और महिलाएं आधुनिक खेती में दक्ष बन सकें। सीड-हब की स्थापना हाल ही में केंद्र में एक सीड-हब शुरू किया गया है, जो किसानों द्वारा उत्पादित खाद्य बीजों का प्रसंस्करण करता है और उन्हें गुणवत्तापूर्ण बीज उपलब्ध कराता है। आर्या परियोजना युवा कृषि-रूचि रखने वालों को विशेष प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है यह सब कार्य कृषि वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों के समन्वित प्रयास से संचालित हो रहे हैं। हम आप सभी किसानों मित्रें को आमंत्रित करते हैं हमारे साथ जुड़ें, प्रशिक्षण लें, सलाह पाएं और अपने कृषि व्यवसाय को नई ऊँचाईयों पर लें जाएँ। हमारी टीम की तत्परता बनी रहेगी- आपके लाभ और समृद्धि के लिए।

परिचय

कृषि विज्ञान केन्द्र, हरिहरपुर, वैशाली, बिहार की स्थापना 27.03.1997 को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर के अधीन हुई। कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली जिला 2036 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ और 25^{0}41N 85^{0} 13 E/25-68^{0} N 85-22^{0} E पर स्थित है। कृषि विज्ञान केन्द्र, हरिहरपुर, वैशाली के अंतर्गत कुल 16 प्रखण्ड, 290 ग्राम पंचायत और 1572 गाँव है। कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली राष्ट्रीय राजमार्ग-77 के निकट है।

केन्द्र के समस्त तकनीकी हस्तान्तरण कार्यक्रम **करके सीखो एवं देखकर विश्वास करो** के सिद्धांत पर संचालित किया जाता है, तथा प्रौद्योगिकी में निहित वास्तविक दक्षता को सिखाने पर बल दिया जाता है। यह केन्द्र एक ऐसी महत्वाकांक्षी, वैज्ञानिक संस्था है, जहाँ किसानों एवं कृषि कार्य में संलग्न महिलाओं तथा ग्रामीण युवकों/युवतियों को व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे स्वावलंबी बनने के साथ तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर सके। प्रशिक्षण मुख्यतः उद्यानिकी, पौधा संरक्षण, कृषि अभियंत्रण, गृह विज्ञान, पशु पालन, फसल उत्पादन एवं अनेक कृषि संबंधित विषयों में प्रशिक्षण दिया जाता है। केन्द्र के द्वारा किसानों के खेतों पर किसानों को शामिल करते हुए वैज्ञानिकों की देख-रेख में उन्नत तकनीकी का परीक्षण किया जाता है, तथा कृषकों एवं विस्तार कार्यकर्त्ताओं के समक्ष आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकी का अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण किया जाता है। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों, विषय वस्तु विशेषज्ञों, विस्तार कार्यकर्त्ताओं तथा कृषकों की संयुक्त सहभागिता से कार्य करता है। केन्द्र पर प्रशासनिक भवन में प्रत्यक्षण कक्ष व केन्द्र पर मशरूम उत्पादन, केचुआ पालन, अजोला इकाई, केला रेशा निष्कर्षण, सोलर सिंचाई प्रणाली, पोषण वाटिका, उद्यानिक फसलों की मातृ वृक्ष वाटिका, केन्द्र के प्रक्षेत्र में सिंचाई (जमीन के अंदर पाईप द्वारा व स्प्रिंकलर व ड्रिप सिंचाई पद्वति) एवं समेकित कृषि प्रणाली के अंतर्गत (मत्स्य पालन, वर्मीकम्पोस्ट यूनिट, बटेर पालन, मुर्गी पालन) का कार्य कराया गया है। इसके अतिरिक्त किसानों के समग्र विकास हेतु मृदा जाँच मिट्टी जाँच प्रयोगशाला, मधुमक्खी पालन, मशरूम, संरक्षित खेती हेतु पॉलीहाउस, नेट हाउस आदि स्थापित है। जिससे किसानों का केन्द्र पर भ्रमण के दौरान देखकर विश्वास करो के सिद्धांत द्वारा जानकारी उपलब्ध करायी जा रही है।

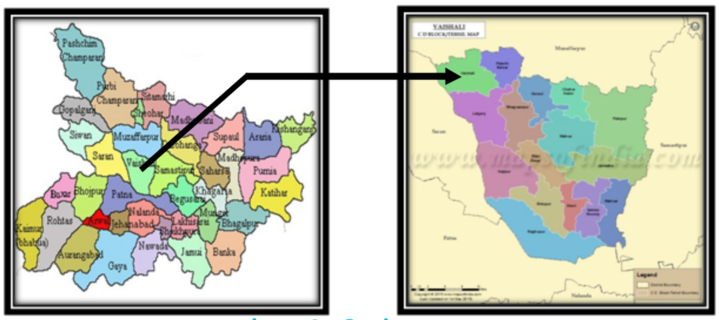

वैशाली जिले का नक्शा

कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिदेश:-

तकनीकियों/उत्पादों का मूल्यांकन एवं उसका प्रदर्शन करना कृषि विज्ञान केन्द्र का मुख्य अधिदेश (मेन्डेट) है।

कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियाँ

1. विभिन्न कृषि प्रणालियों के अंतर्गत किसानों के खेत पर परीक्षण (ऑन फार्म ट्रायल) द्वारा स्थान विशेष कृषि तकनीकियों की पहचान करना।
2. कृषक प्रक्षेत्रों पर तकनीकी की उत्पादन क्षमता के स्थापना/प्रदर्शन हेतु अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित करना।
3. किसानों के लिए हेतु आधुनिक कृषि तकनीकियों के विषय में ज्ञानार्जन एवं कौशल संवर्द्धन हेतु प्रशिक्षण आयोजित करना।
4. प्रसार कार्यकत्ताओं के लिए उनके अग्रिम क्षेत्र विशेष में तकनीकी विकास के ज्ञान संवर्द्धन हेतु प्रशिक्षण आयोजित करना।
5. जिले के कृषि अर्थव्यवस्था के उन्नयन हेतु सार्वजनिक, निजी तथा स्वयंसेवी क्षेत्रों के लिए संसाधन एवं ज्ञान केन्द्र के रूप में कार्य करना।
6. उन्नतशील बीज, पौध तथा जैविक उत्पादों का उत्पादन कर कृषकों को उपलब्ध कराना।
7. किसानों को विभिन्न विषयों पर सूचना एवं संचार तकनीक और अन्य मीडिया माध्यमों का उपयोग करके कृषि परामर्श प्रदान करना।

केन्द्र पर उपलब्ध संरचनाएँ

प्रक्षेत्र की स्थिति

कृषि विज्ञान केन्द्र, हरिहरपुर, वैशाली प्रक्षेत्र की मिट्‌टी दोमट है। पी.एच. 6.52-7.0, कृषि विज्ञान केन्द्र के अधीन उपलब्ध भूमि

क्र० सं०	इकाई	क्षेत्रफल(हे०)
1.	भवन	0.14
2.	प्रदर्शन इकाई	0.5
3.	फसल	3.44
4.	बागवानी	4.52
5.	अन्य (रोड, तालाब)	1.44
	कुल	**10.04**

आधारभूत संरचना

1.	प्रशासनिक भवन
2.	किसान घर
3.	सीड भंडारण कक्ष
4.	थ्रेसिंग फ्लोर
5.	सोलर सिंचाई प्रणाली (सोलर ट्री)
6.	बोरिंग घर
7.	पॉलीहाउस
8.	शेडनेट(02)

केन्द्र पर प्रदर्शन इकाईयाँ

क्र० सं०	प्रदर्शन इकाई	क्र० सं०	प्रदर्शन इकाई
1.	वर्मीकम्पोस्ट इकाई	6.	खाद्य प्रसंस्करण इकाई
2.	समेकित कृषि प्रणाली	7.	प्रदर्शनी इकाई
3.	पौधशाला	8.	मृदा जाँच प्रयोगशाला
4.	अजोला इकाई	9.	मशरूम प्रयोगशाला
5.	पोषण वाटिका	10.	पुस्तकालय

Operational Areas

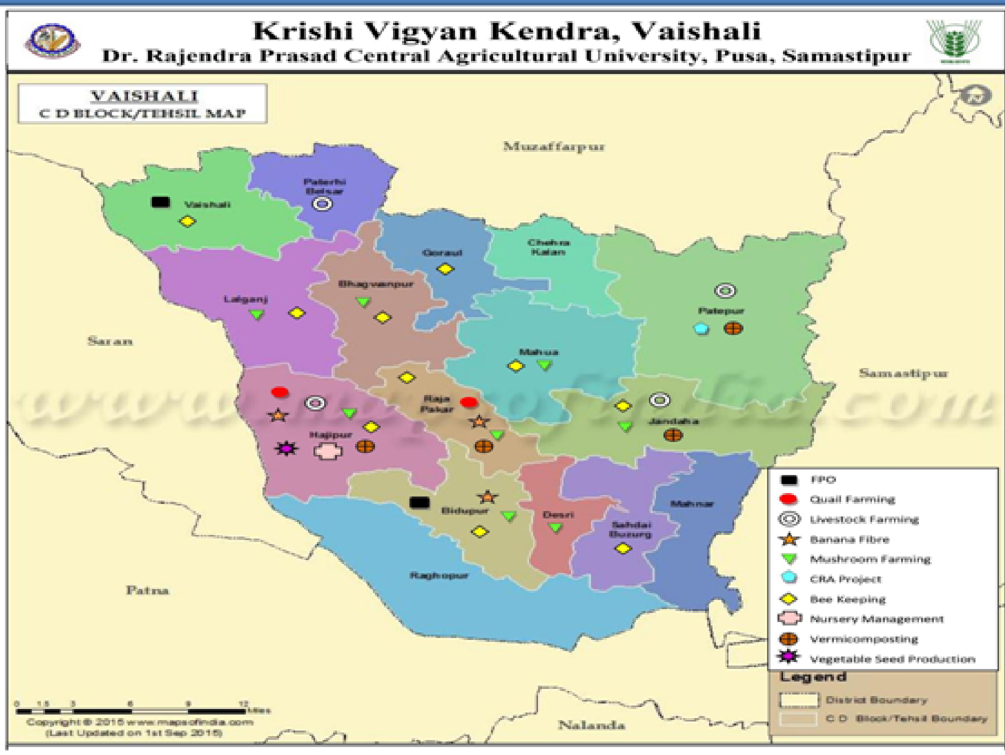

प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली के द्वारा नवीनतम कृषि जानकारी हेतु कृषकों प्रसार कार्यकर्ताओं एवं नवयुवकों के रोजगार सृजन के लिए वर्ष 2018-19 से 2024-25 तक विभिन्न विषयों पर आयोजन किया जाता है। 1158 प्रशिक्षण कार्यक्रम में 20513 लाभार्थी लाभान्वित हुए। कृषकों के रोजगार तथा आय सृजन हेतु मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, नर्सरी उत्पादन, केला रेशा निष्कर्षण, बकरी पालन, समेकित कृषि प्रणाली, पोषण सुरक्षा, पोषण वाटिका, केला रेशा, मूल्य संवर्धन तकनीक, कृषि यंत्रों का उपयोग एवं महत्व नर्सरी प्रबंधन अन्य कृषि संबंधी विषयों पर प्राक्षिण कराया गया। जिसमें 4234 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों के द्वारा जिले के प्रसार कर्मियों को प्रशिक्षित किया गया जिसमें लगभग 8500 प्रसार कर्मी लाभान्वित हुए।

कृषि के क्षेत्र में हो रहे नित नए अनुसंधानों प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन किसानों के आवश्यकताओं के अनुरूप, क्षेत्र विशेष में किसानों के प्रक्षेत्र पर करना ऑन फार्म ट्रायल का प्रमुख उद्देश्य है। नवीन तकनीकियों का अवलोकन मान्यकरण उपरांत वृहद स्तर पर कृषकों के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कराकर तकनीकियों का प्रचार प्रसार किया जाता है, जिससे किसानों की आय से वृद्धि हो सके तथा पोषण व्यवस्था में सुधार के साथ-साथ जीवनयापन ऊपर उठ सके। किसानों के प्रक्षेंत्र पर निम्नलिखित परीक्षण कार्यक्रम कराया गया है।

किसानों के प्रक्षेत्र पर परीक्षण कार्यक्रम

❖ मशरूम से तैयार बिस्कुट का आंकलन और सेल्फलाइफ में वृद्धि एवं उच्च पोषक तत्व :

सामान्यता यह देखा जाता है कि मशरूम का उपयोग ताजा सब्जियों के रूप में करते हैं मशरूम का सेल्फलाइफ बहुत कम होता है। जिससे कारण किसानों का अत्यधिक मशरूम खराब हो जाता है। इसलिए मशरूम पाउडर तैयार करके विभिन्न खाद्य पदार्थ बनाया जा सकता है जिससे उसकी सेल्फलाइफ भी बढ़ जाती है साथ ही साथ बिस्कुट के पोषक तत्वों में वृद्धि हो जाती है। कृषक पद्धति केवल ताजे मशरूम को सब्जियों का सेवन टी ओ-1

मशरूम बिस्कुट की तैयारी टी ओ-2 रागी और मशरूम पाउडर से बिस्कुट की तैयारी करने की प्रक्रिया में मशरूम पाउडर से बिस्कुट की तैयारी करने की प्रक्रिया में मशरूम पाउडर 10 प्रतिशत रागी 20 प्रतिशत और मैदा 70 प्रतिशत इस परीक्षण में पाया गया कि स्वीकार्यता के लिए अधिकतम संवेदी मूल्यांकन स्कोर साधन के दूसरे संयोजन में मैदा और मशरूम पाउडर का उपयोग किया गया। जिसका पोषक तत्वों की मात्र कम पाई गई। टी ओ-2 में मैदा मशरूम पाउडर के साथ-साथ रागी (मिलेट) का उपयोग किया गया है। इसमें पोषक तत्वों की मात्र अधिकतम प्राप्त होगी। हालांकि भंडारण के 90 दिनों तक स्वीकार्य है। अतः इस परीक्षण से यह पाया गया कि मशरूम बिस्कुट बनाकर मशरूम का मूल्यवर्धन द्वारा इसकी सेल्फलाइफ बढ़ाई जा सकती है।

❖ ऑयस्टर मशरूम प्रक्षेत्र परीक्षण

मशरूम के सेल्फलाइफ पर विभिन्न पैकेजिंग सामग्री का मूल्यांकन सामान्यतया पाया जाता है कि ऑस्टर मशरूम का सेल्फलाइफ बहुत कम होता है और जल्दी खराब हो जाता है रंग भूरा हो जाता है। इस परीक्षण के द्वारा मशरूम को पूर्व उपचारित रासायनिक विधि से सुखाया जाता है और उसे पैकेजिंग कर इसके सेल्फ लाइफ को बढ़ाया जाता है। इसका परीक्षण 7 किसानों के क्षेत्र में किया गया जो ऑएस्टर मशरूम की खेती करते हैं। कृषक पद्धति उपचार नहीं करने टी ओ-1 पूनेट साफ पानी से धोने के बाद 0.05 प्रतिशत पोटैशीयम मेटा बाइसल्फेट से पूर्व उपचारित करने बाद सोलर ड्रायर में सुखाया जाता है। टीओ-2 बायोडिग्रेडे बल 40-60 माइक्रॉन या 100-150 गेज पॉलीथीलीन (साफ पानी से धोने के बाद, 0.1 प्रतिशत साइट्रिक अम्ल एवं 0.05 प्रतिशत पोटैशीयम मेटाबाई सल्फेट से पूर्व उपचारित करने बाद सोलर ड्रायर में एक सुखाने के बाद इस परीक्षण के बाद पाया गया कि विकल्प का प्रारंभ में पूनः निर्जलीकरण अनुपात (3.85), रंग (8.7), समग्र स्वीकार्यता (8.5) जो कि 90 दिनों तक भंडारण करने के बाद कम होने लगता है। अतः इस परीक्षण से पाया गया है कि तकनीकी विकल्प (टी ओ-2) से मशरूम का सेल्फ लाइफ बढ़ाया जा सकता है और इसे किसानों के लिए अनुशंसा किया जा सकता है।

❖ धान में नैनो यूरिया के माध्यम से नाइट्रोजन उपयोग क्षमता में सुधार

वैशाली जिले में धान की खेती 39734 हेक्टेयर क्षेत्रफल की जाती है। किसान भाई नन्त्रजन की संतुलित मात्र का प्रयोग यूरिया के माध्यम से करते हैं जिसमें खर्च अधिक लगता है। धान की खेती में लागत को कम करने के लिए नैनो यूरिया का प्रयोग कर धान उत्पादन के प्रभाव तथा लागत का मूल्यांकन 08 किसानों के यह अनवनपुर, धरहरा, लोमा, शुभई, हरपुर मुकुन्द, फरीदपुर गाँव में किया गया। धान का उपज कृषक पद्धति में सबसे अधिकतम 45.24 क्विंटल/हेक्टेयर प्राप्त हुआ। जो कि टी ओ-02 एवं टी ओ-01 में प्राप्त धान के उपज के साथ समतुल्य है। अतः नैनो यूरिया का धान के फसल में खास लाभ नहीं पाया गया।

❖ भिंडी में फल एवं तना छेदक तथा चूसक कीट नियंत्रण हेतु पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन

वैशाली जिला में अधिकांश किसान सब्जियों की खेती करते हैं। जिसमें खरीफ के मौसम में भिंडी की खेती बड़े पैमाने पर होती है। इसकी खेती में किसानों को फल भेदक एवं पत्ती चूसक कीटों के आक्रमण से आर्थिक रूप से बहुत अधिक नुकसान होता था। इन्हीं समस्याओं की गंभीरता से देखते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा एक परीक्षण किसानों के खेतों में किया गया। इस परीक्षण में किसानों के पद्धति के अलावा अलग-अलग अन्य पद्धति अपनाए गए जो इस प्रकार है-

तकनीक-1 पीला/ब्लू चिपचिपा फाँस 10-20 फाँस/प्रति एकड़, फेरोमोन ट्रैप @15 प्रति एकड़ के साथ नीम तेल (एजाटेरेक्टिन 1500 पी पी एम) @5 एम एल प्रति लीटर पानी।

तकनीक-2 में पीला/ब्लू चिपचिपा फॉस 10-20 प्रति एकड़. फेरोमोन ट्रैप @15 प्रति एकड़ तथा इमामेक्टिन बेंजोएट 5 प्रतिशत एस जी @0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी के दर से छिड़काव शामिल किया गया।

- ❖ तकनीकों का फसल में उपयोग करने के उपरांत परिणाम मिला कि तकनीक-1 में बनाए गए विधि का उपयोग कर किसान अपने फसल में कीट एवं रोगों में भी भारी कमी देख सकते हैं। परिणाम स्वरूप कुल उपज में 38.11 प्रतिशत की वृद्धि का आंकलन किया गया है। इस तकनीक के प्रयोग से किसान रसायन रहित गुणवत्तायुक्त सब्जी उत्पादन कर सकते हैं

❖ बैंगन में ऊक्था रोग-थाम के लिए माइक्रोबियल कंसोर्टिया का प्रयोग-

वैशाली जिले में बैंगन के खेती बड़े पैमाने की जाती है और इस फसल में ऊक्था रोग की समस्या काफी देखने को मिलती है। इसके रोकथाम के लिए माइक्रोबियल कंसोर्टिया का अहम भूमिका है। विभिन्न कृशकों के प्रक्षेत्र पर दो प्रकार के माइक्रोबियल कंसोर्टिया का प्रयोग किया गया-IIHR कंसोर्टिया और NRC Trichoderma बैंगन के फसल में अधिकतम उपज(340.32 क्विंटल/हेक्टेयर) IIHR कंसोर्टिया के प्रयोग से पाया गया और इसके बाद NRC Trichoderma के प्रयोग से 299.12 क्विंटल/हेक्टेयर फलन पाया गया। जो कि कृषक पद्वति के तुलना में 27.4 प्रतिशत एवं 11.9 प्रतिशत ज्यादा है।

किसानों के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम

❖ लत्तीदार सब्जियों में फल मक्खी नियंत्रण हेतु फ्रूट फ्लाई ट्रैप का प्रदर्शन

वैशाली जिला में किसानों द्वारा वृहत् पैमाने पर सब्जियों की खेती की जाती है जिसमें लत्तीदार सब्जियों की खेती में फल मक्खी के प्रकोप की बहुत बड़ी समस्या होती है, इसके प्रकोप से लगभग 30-100 प्रतिशत तक फल क्षति होता है। इससे निजात पाने के लिए किसान रासायनिक कीटनाशकों पर पूर्णतः निर्भर रहते हैं। ऐसे में कृषि विज्ञान केन्द्र वैशाली ने जिले के पाँच चिह्नित गाँवों में 25 किसानों के 5 हेक्टेयर प्रक्षेत्र पर फ्रूट फ्लाई ट्रैप प्रत्यक्षण का किया। इस ट्रैप के प्रयोग से कीट के प्रकोप में काफी कमी आती है तथा उपज में 40-45 प्रतिशत तक की वृद्वि होती है, तथा आय में 60 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान लगाया गया है। फ्रूट फ्लाई ट्रैप का प्रयोग कर किसान हानिकारक रसायन रहित तथा उच्च गुणवत्ता वाले उपज प्राप्त कर रहे हैं।

❖ धान में वर्मीकम्पोस्ट एवं जस्ता का उपयोग

वैशाली जिले में धान की खेती 39734 हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है लेकिन किसानों को धान के फसल में सूक्ष्म पोषक तत्व और जैविक खाद के आवश्यकता की जानकारी नहीं है। धान के फसल में जस्ता पौधों में विभिन्न चयापचय प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करता है। कृषकों के प्रक्षेत्र पर धान के फसल में वर्मीकम्पोस्ट का उपयोग एवं जस्ता का छिड़काव 25 किसानों के खेत में मरिचाराम गाँव में प्रदर्शन लगाया गया। धान का औसतन उपज 46.85 क्विंटल/हेक्टेयर प्राप्त हुआ जो कि कृशक पद्वति से 4.5 प्रतिशत अधिक है तथा लागत-लाभ अनुपात 2.12 हुआ।

❖ वायुरूद्ध बैंग में गेहूँ का भंडारण

गेहूँ एवं अन्य फसल की कटाई के बाद प्रबंधन एक महत्वपूर्ण चुनौती है। अनाज एवं बीज को खराब होने से बचाने के लिए अनाज का भंडारण करना महत्वपूर्ण है। गेहूँ, चावल मक्का एवं अन्य अनाज को कीटों के संक्रमण से बचाने के लिए वायुरूद्ध बैंग का इस्तेमाल किया जाता है। जिसमें कीटनाशकों का प्रयोग नहीं किया जाता है। उचित भंडारण नहीं होने के कारण अनाज खराब हो जाता है। इस प्रदर्शन को 20 किसानों के प्रक्षेत्र चपुता, पातेपुर, नीरपुर, वाजितपुर, बिदुपुर, मजलिसपुर, समसपुरा गॉव में किया। किसान पारंपरिक विधि में रासायनिक कीटनाशक (सल्फॉस) डाल के बीज का भंडारण करते थे। परंतु वायुरूद्ध बैग में भंडारण करने के बाद किसानों का बीज छः माह तक बिना कीटनाशक के उपयोग से भंडारण करने लगे। प्रदर्शन के उपरांत पाया गया कि अनाज की हानि (0.05 प्रतिशत) जो कि पारंपरिक विधि में (11 प्रतिशत) दर्ज किया गया।

❖ सब्जियों के अच्छी गुणवत्ता एवं उच्च उपज वाले बीज एवं पौधे का प्रदर्शन

वैशाली जिले के अधिकतर किसान सब्जियों की खेती से जुड़े हुए है, लेकिन किसानों को अच्छी गुणवत्ता वाले सब्जियों के प्रभेद के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं है। ग्रीष्मकालीन सब्जियाँ जैसे- टमाटर(काशी आदर्श), भिंडी(काशी लालिमा), नेनुआ(काशी श्रेश्या), करेला(काशी प्रतिष्ठा), मिर्च(काशी आभा), पालक(काशी बारामासी), खीरा(काशी नूतन), बोरा (काशी बौनी), इत्यादि के उच्च उपज वाले बीज एवं पौधों का किसान के खेतों में प्रदर्शन दिया गया। किसानों द्वारा उपयोग होने वाले स्थानीय बीज की तुलना में उपर्युक्त सभी किस्म के बीजों से बेहतर उपज हुआ और किसानों को आर्थिक रूप से काफी लाभ हुआ।

समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन–

तिलहन- समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (तेलहनी फसल वर्ष 2022-23) में सरसों फसल की उन्नत प्रभेद Rajendra Suflam के साथ-साथ समेकित फसल प्रबंधन सहित 150 किसान (20 हेक्टेयर क्षेत्रफल में) लोमा, धरहस, थानपुर, वाजितपुर गाँव कराया गया। प्रदर्शन उपरांत प्रभेद Rajendra Suflam का अधिकतम उत्पादन 20.42 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा न्यूनतम 16.00 क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त हुआ जबकि 58 किसानों का औसत उपज 18.20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पाया गया। जो कि कृषक पद्धति से 18 प्रतिशत अधिक है तथा लागत- लाभ अनुपात 3.19 हुआ। वर्ष 2023-24 में सरसों की उच्च उत्पाद प्रजाति DRMR 150-35 के साथ संतुलित उर्वरकों के प्रयोग बीजशोधन एवं माँहू कीट के प्रबंधन का प्रदर्शन 150 किसान (60 हेक्टेयर क्षेत्रफल में) किया गया।

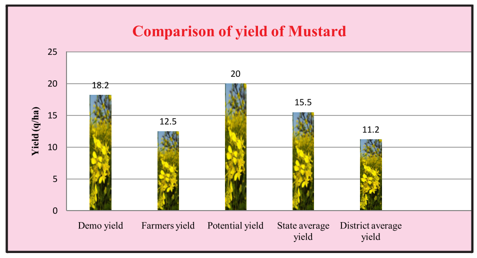

दलहन (मसूर)- समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (दलहनी फसल वर्ष 2022-23) में मसूर फसल की उन्नत प्रभेद आई पी एल 316 के साथ-साथ समेकित फसल प्रबंधन का प्रदर्शन (16 हेक्टेयर क्षेत्रफल में) 40 किसानों के यहाँ फरीदपुर, लालगंज, हरिहरपुर, सेन्दुआरी, लोमा बोझा, धरहरा, थानपुर, वाजितपुर गाँव में कराया गया। मसूर की उच्च उत्पाद प्रजाति आई पी एल-316 के साथ संतुलित उर्वरकों के प्रयोग बीजशोधन एवं माँहू कीट के प्रबंधन का प्रदर्शन कराने पर कृषक पद्धति की अपेक्षा 25.5 प्रतिशत अधिक उपज प्राप्त हुआ तथा लागत लाभ अनुपात प्रदर्शन कराने पर 2.45 प्राप्त किया गया।

प्रक्षेत्र दिवस

सरसों फसल की उन्नत प्रभेद राजेन्द्र सुफलम् समूह अग्रिम पंक्ति- प्रत्यक्षण के अन्तर्गत 20 हेक्टेयर क्षेत्रफल में कुल 58 किसानों के यहाँ प्रदर्शन कार्यक्रम वर्ष 2022-23 के दौरान 12 गाँवों में कराया गया। प्रखण्ड हाजीपुर के हरिहरपुर ग्राम में दिनांक 17.02.2023 को प्रखण्ड महनार के थानपुर गाँव में दिनांक 16.01.2023 को प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 55 एवं 47 किसानों ने भाग लिया। केन्द्र के प्रक्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष-2023 के अंतर्गत प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन दिनांक 04.11.2023 को हरिहरपुर प्रक्षेत्र में किया गया, जिसमें 70 किसानों ने भाग लिया एवं मिलेट को खेती और उपयोगिता के विषय मे जानकारी प्राप्त किया।

विभिन्न संस्थानों से केन्द्र का सामंजस्य

1. **आत्मा-** इसके द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों में सहयोग करता है, इसके लिए जिले के आकस्मिक योजनाओं को बनाने में केन्द्र के वैज्ञानिकों ने सहयोग दिया है।
2. **केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान-** कृषि विज्ञान केन्द्र को बायोफोर्टिफइड बीज और आलू के उन्नत बीजों को उपलब्ध कराता है।
3. **खाद्यी ग्राम उद्योग संघ-** कृषि विज्ञान केन्द्र के विभिन्न गतिविधियों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में महिलाओं को सम्मिलित करते है। और इस संघ के द्वारा शहद का विप्रण में योगदान प्रदान करता है।
4. **भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान-** केन्द्र को मोटे अनाज के विभिन्न प्रक्षेद परीक्षण का बीज उपलब्ध कराया जाता है।
5. **पशु पालन विभाग-** जिले के पशु पालकों के लिए विभाग द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न योजनाओं में आवेदन में सहयोग के साथ ही विभाग द्वारा आयोजित पशु स्वास्थ्य शिविरों में सहयोग तथा सलाहकारी सेवाएँ प्रदान की जाती है।

प्रायोजित

❖ आर्या परियोजना-

कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली में वर्ष 2016-17 में परियोजना की शुरुआत हुआ आर्या परियोजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण युवाओं के लिए कृषि में आकर्षित करने हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा चलाई जा रही है। जिससे युवाओं को विशिष्ट कृषि उद्यमिता मॉडल अपनाने में युवा क्षमता को उन्नत करता है। इस परियोजना के अंतर्गत पाँच घटकों के आधार पर कार्य हो रहा है। जैसे केला रेशा, नर्सरी प्रबंधन मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन एवं बटेर पालन सभी घटकों में से केला रेशा महिला किसानों द्वारा सबसे अधिक पसंद किये जाने वाले घटकों में से एक हैं। केले के थम्ब से रेशा निकालकर इसके विभिन्न शिल्प निर्माण किया जा रहा है, दूसरा सबसे अधिक अपनाया जाने वाला घटक मशरूम की खेती और बटेर पालन है। इस परियोजना के कारण किसानों की गतिशीलता में सुधार हुआ और किसानों के बीच प्रौद्योगिकी का प्रसार तेजी से हुआ। वैशाली जिले में 494 बटेर इकाई चल रही है, उनमें से 54 आर्या परियोजना के तहत स्थापित की गई। मशरूम उत्पादन इकाई आर्या परियोजना के अंतर्गत अच्छा प्रदर्शन किया जा रहा है। इस परियोजना के तहत ग्रामीण युवाओं ने केला रेशा निष्कर्षण इकाई की स्थापना की गई। जिसमें से एक इकाई रामपुर नौसहन हाजीपुर में स्थापित की गई।

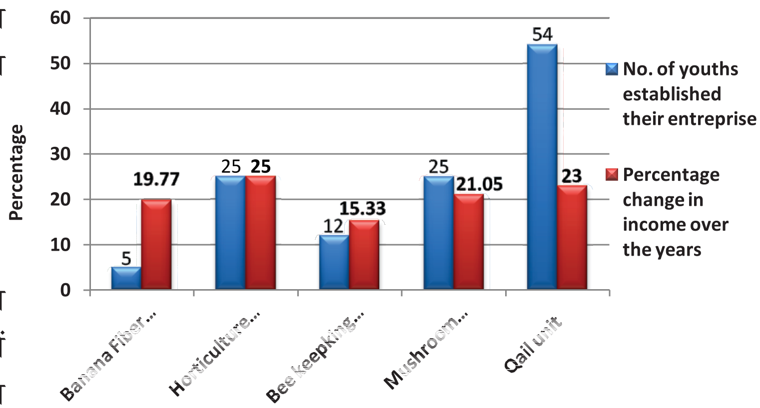

❖ आर्या परियोजना का प्रभाव

❖ जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम-

जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के अंतर्गत किसानों को मौसम के अनुकूल वैज्ञानिक तरीके से खेती करना सिखाया जाता है, जिससे कृषि उत्पादकता बढ़ेगी और किसानों की आय में वृद्धि होगी। वर्ष 2020 से रबी मौसम में जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम केन्द्र के द्वारा प्रखण्ड पातेपुर के पाँच गाँवों (निरपुर, बरडीहा, वाजितपुर, रसलपुर और रेपुरा) में संचालित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत शून्य जुताई से गेहूँ की बुआई, न्यूट्रेट एक्सपर्ट। ग्रीन सीकर के द्वारा गेहूँ में समेकित पोषक तत्व प्रबंधन सामुदायिक सिंचाई प्रणाली से गेहूँ की खेती, मक्का की सीधी बुआई मक्का के साथ अंतर फसल, शून्य जुताई एवं सीधी बुआई से मसूर की बुआई, आलू की अंतर फसल, आलू की खेती, सरसों की सीधी बुआई, धान की सीधी बुआई, समूह बहद सिंचाई पद्धति में धान की खेती, सूखा/गीला सिंचाई पद्वति से धान की खेती, जल संरक्षण एवं मेढ़ निर्माण के द्वारा धान की खेती, न्यूट्रेट एक्सपार्ट। ग्रीन सीकर के द्वारा धान में समेकित पोषक तत्व प्रबंधन कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

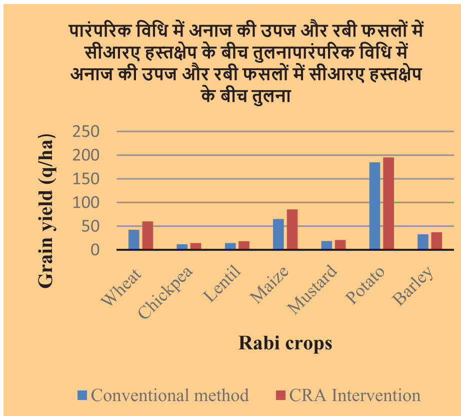

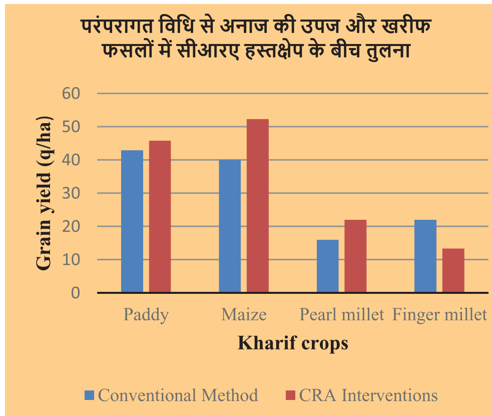

❖ अनुसूचित जाति उपयोजना-

इस योजना के अंतर्गत अनुसुचित जाति के कृषकों के लिए पोषण सुरक्षा, जीवनयापन स्तर में सुधार तथा आय संवर्धन के लिए प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं विभिन्न प्रकार के उत्पादक सामग्री वितरण(मशरूम स्पॉन, सब्जियों का पौधा इकाई) द्वारा लाभ पहुँचाया जा रहा है।

❖ नारी परियोजना-

नारी परियोजना वर्ष 2021 के भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा संचालित किया गया है। इस परियोजना के अंतर्गत ग्रामीण महिलाओं को सशक्त तथा आँगनवाड़ी केन्द्रों के माध्यम से पोषण सुरक्षा हेतु जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है। जिसमें प्रशिक्षण प्रदर्शन तथा विभिन्न प्रकार के सब्जी बीज और पौधा सामग्री वितरण कि पोषण वाटिका स्थापना हेतु लाभ पहुँचाया जा रहा है।

आर० पी० एल० (Recognition of Prior Learning)

बिहार कौशल विकास मिशन के तहत वर्मीकम्पोस्ट उत्पादक, मधुमक्खी पालक, कृषि विस्तार सेवा प्रदाता विषय पर 10 दिनों का आर.पी.एल. प्रशिक्षण जनवरी-2025 से कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली में शुरू हुआ। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए कुल 90 प्रशिक्षुओं को पंजीकृत किया गया था, जहाँ युवाओं की रोजगार क्षमता को और बढ़ाने के लिए सिद्धांत, व्यावहारिक और प्रक्षैनिक भ्रमण आयोजित किए जाते हैं।

स्वच्छता ही सेवा

02 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा स्वच्छ भारत अभियान का आरंभ किया गया था। स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया गया सबसे महत्वपूर्ण स्वच्छता अभियान है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत केन्द्र द्वारा क्षेत्र के कृषकों एवं सरकारी स्कूल के बच्चों के बीच स्वच्छता ही सेवा जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

उपलब्धियाँ

प्रसार गतिविधियाँ

केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न प्रसार गतिविधियों (जागरूकता कार्यक्रम, किसान गोष्ठी, कृषक वैज्ञानिक कार्यक्रम) के माध्यम से किसानों तक नवीनतम कृषि तकनीकियों को पहुँचाया जा रहा है।

सोलर ड्रायर

सोलर ड्रायर कम लागत वाला ड्रायर है, जिसमें स्थानीय रूप से उपलब्ध समानों से प्लाई की लकड़ी बनाया गया है इस ड्रायर में मुख्यतः एग्जास्ट फैन जो सौर सेल (05 वाट) द्वारा संचालित होता है। एग्जास्ट फैन के द्वारा सोलर ड्रायर के अन्दर के नमी को बाहर करता है। इसमें एक पारदर्शी ग्लास मोटाई (5 एम.एम.) जिससे सूर्य की रोशनी चैम्बर के अन्दर आती है, और इसके अन्दर की सतह को काले रंग से रंगा गया है। सोलर ड्रायर का साइड पैनल 15 डिग्री पर झुका हुआ है। जिससे सूर्य की अधिकतम रोशनी अन्दर जा सके। सोलर ड्रायर का उपयोग फल एवं सब्जियों का सूखने में इस्तेमाल किया जाता है। जिससे उत्पादकों का रंग पोषक तत्व एवं गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी होती है। इसके अन्दर का तापमान में वृद्धि 55 डिग्री तक एवं आर्द्रता में 17 प्रतिशत तक में कमी होती है। किसान बिना बिजली के फल एवं सब्जियों में सूखाकर बाजार में बेचकर मुनाफा कमा सकते हैं, क्योंकि जब उत्पादन अधिक होने पर उसका भंडारण ज्यादा दिन तक नहीं कर सकते हैं, अगर किसान सोलर ड्रायर का उपयोग करके फल एवं सब्जियों को सूखाकर लम्बे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं, और उसका विभिन्न मूल्यसंवर्धित उत्पाद बनाकर आय को बढ़ा सकते हैं।

❖ समेकित कृषि प्रणाली इकाई

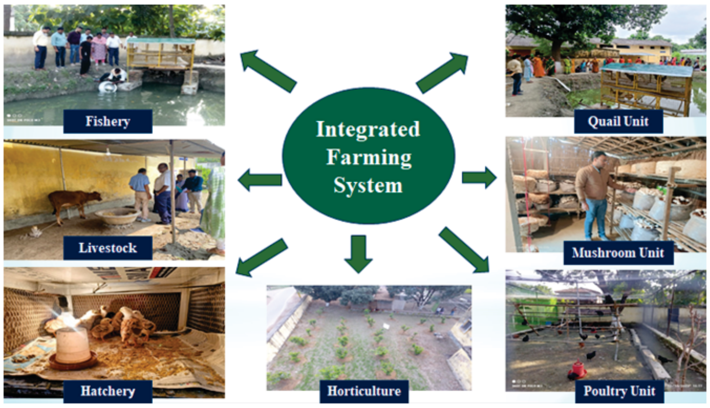

समेकित कृषि प्रणाली कार्यालय परिसर में स्थापित समेकित कृषि प्रणाली मॉडल में 7 घटक है, जैसे- बटेर, मुर्गीपालन, मत्स्य पालन, डेयरी, मशरूम और बागवानी फसलें। बटेर इकाई को दीवार के साथ-साथ जमीन में भी स्थापित किया गया है। मुर्गी-पालन इकाई 65 X 35 वर्गफीट क्षेत्रफल स्थापित की है। इस क्षेत्र को विशेष कर तीन भागों में समान रूप से विभाजित किया गया है। एक इकाई का उपयोग सर्दियों के मौसम में मुर्गियों के लिए किया जाता है और दूसरे का उपयोग बटेर पक्षियों के पालन के लिए किया जाता है। 30 X 20 तालाब में मत्स्य पालन के लिए रोहू, कतला और ग्रासक्रैप, फिगरलिंग को डाला गया। इसके अंतर्गत में एक साहिवाल नस्ल की एक गाय है। मछली पालन तालाब के ऊपर एक मुर्गीपालन पिंजरा भी स्थापित किया गया है। ताकि मुर्गीपालन के अपशिष्ट का उपयोग तालाब में मछलियों द्वारा भोजन के रूप में किया जा सके। गाय के गोबर और मशरूम के कचरे का उपयोग वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने के लिए किया जाता है, जिसका उपयोग समेकित कृषि प्रणाली इकाई में लगाई गई, बागवानी फसलों में किया जाता है। समेकित कृषि प्रणाली में एक घटक दूसरे घटक के उपयोग में लाया जाता है। छोटे किसान खेती से होने वाले आय से अपनी आवश्यकताओं को पूर्ति कर पाने में असमर्थ होते हैं। समेकित कृषि प्रणाली के माध्यम से कम जगह में अधिक लाभ प्राप्त कर सकता है। प्रतिवर्ष 1500 मुर्गीपालन से 5 लाख का सलाना आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। पिंजरा पद्वति का उपयोग करके बटेर पालन से प्रतिवर्ष 40,000 रू का मुनाफा एवं वर्मीकम्पोस्ट इकाई से लगभग 50,000 रु तक कमाया जा सकता है।

❖ किसान उत्पादक संगठन

कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली के अंतर्गत 02 किसान उत्पादन संगठन है। दीवान किसान उत्पादक संगठन और समृद्धि किसान उत्पादक संगठन है। किसान उत्पादक संगठन दीवान उत्पादक संगठन की प्रमुख गतिविधियाँ शहद उत्पादन इसमें सदस्यों की संख्या 405 है। समृद्धि किसान उत्पादक संगठन की प्रमुख गतिविधियाँ फल एवं सब्जियाँ इसमें सदस्यों की संख्या 415 है। कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली के द्वारा अन्य 32 किसान उत्पादक संगठन को तकनीकी रूप से सहायता प्रदान किया जाता है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, खादी संस्थान पटना, कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली और किसान उत्पादक संगठन दीवान किसान उत्पादक संगठन के साथ समझौता ज्ञान पर हस्ताक्षर किया गया।

❖ मिनी स्प्रिंकलर

''कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली'' के प्रक्षेत्र में सभी प्रदर्शन इकाई जैसे औषधीय पौधे, सजावटी पौधों की नर्सरी, शहरी बागवानी इकाई, पोषण वाटिका इत्यादि में मिनी स्प्रिंकलर स्थापित किया गया है। जिससे कि आसानी से कम लागत में आवश्यकता अनुसार सिंचाई की जाती है।

इससे 30 प्रतिशत तक पानी की बचत एवं विद्युत खर्च में 15 प्रतिशत की बचत होती है।

केन्द्र से जुड़े किसानों की सफलता की कहानी

रामपुर नौसहन में रहने वाले **श्री जगत कल्याण** आर्या परियोजना के अंतर्गत एक सफल युवा है। केन्द्र की सहायता से इन्होंने तरुवर एग्रो नामक एक स्वयं सहायता समूह का निर्माण किया है, जिसमें 25 सदस्य है। इस समूह को आर्या परियोजना के अंतर्गत केन्द्र से एक केला रेशा निष्कर्षण मशीन भी उपलब्ध कराया गया है। इनके द्वारा केले के थम्म से रेशा निकालकर कपड़ा उद्योग में कच्चे माल के रूप में बेचा जा रहा है और इससे येसलाना 5 लाख का शुद्ध लाभ कमा रहे हैं।

लोदीपुर नारायण गली में रहनेवाली **श्रीमति मीना कुशवाहा** एक सफल मशरूम उत्पादक है, जिन्होंने केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त करके मशरूम उत्पादन एवं मशरूम से मूल्यसंवर्धन का काम शुरू किया। वे विभिन्न मेला एवं प्रदर्शनियों में मशरूम और मशरूम उत्पादों की मार्केटिंग कर रही है, और इससे ये सलाना 1.5 लाख का शुद्ध लाभ कमा रही हैं।

रामपुर बखरा(लालगंज) में रहने वाली **श्रीमति संगीता कुमारी** एक सफल मशरूम उद्यमी है। केन्द्र की सहायता से इन्होंने लिच्छवी नामक एक उद्योग की निर्माण किया है। केन्द्र की सहायता से ये मशरूम एवं मशरूम से बने मूल्यसवंर्धित उत्पाद बनाकर विभिन्न मेला, प्रदर्शनियों एवं स्थानीय बाजार में बेच रही है। इससे ये सलाना 1.2 लाख का शुद्ध लाभ कमा रहे हैं।

नयागंज टोला (सहदेई बुजुर्ग) के रहने वाले **श्री विजय कुमार** साह एक सफल मधुमक्खी पालक है। जिन्होंने केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त करके वर्ष 2020 में 50 बक्से से मधुमक्खी पालन की शुरुआत की जो कि वर्तमान में उनके पास लगभग 335 बक्से है। मधुमक्खी पालन से लगभग 7.5 लाख प्रति वर्ष आय का सृजन कर रहे हैं, इनके साथ दो बेरोजगार युवा जुड़कर भी अपना जीविकोपार्जन चला रहे हैं।

सूचना एवं संचार तकनीकी

नवीनतक कृषि तकनीकियों का सूचना एवं संचार माध्यम द्वारा किसानों के ज्ञानार्जन हेतु समय-समय पर प्रसारित किया जा रहा है।

Total number of people connected: 1877

Total number of people connected: 1350

Total number of people connected: 5505

Total number of people connected: 4500 KISAN SARATHI • Powered By IIDS •

चक्रीय निधि

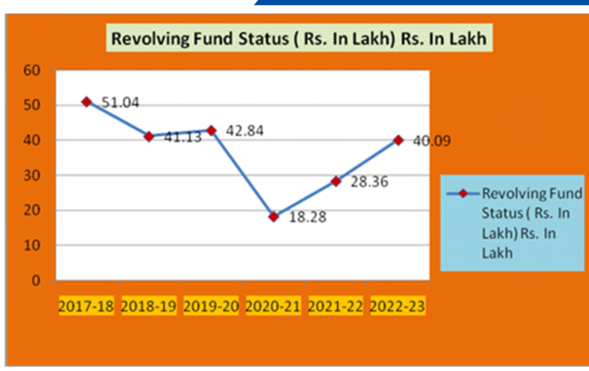

पुरस्कार एवं सम्मान

समाचार पत्रों में कृषि विज्ञान केन्द्र

प्रकाशन

शोध पत्र–22	पुस्तक–01	लोकप्रिय लेख–21	फोल्डर– 05
पैम्फलेट्स–12	सेमिनार/सिम्पोजिया/कान्फ्रेंस/कार्यशाला में प्रकाशित शोध पत्र		15

कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली

प्रगतिशील किसान

मो. मुशर्रफ खलील
बखरी बरै, राजापाकर, वैशाली

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन

मो. मुशर्रफ खलील, गाँव- बखरी बरै, प्रखण्ड- राजापाकर, जिला-वैशाली के निवासी है। । कृषि विज्ञान केंद्र, वैशाली के माध्यम से एकीकृत कृषि प्रणाली की जानकारी प्राप्त करने के बाद उन्होंने अपने 10 हेक्टेयर के खेत में अनाज की फसल, बागवानी फसल, मुर्गी पालन, बकरी पालन और बटेर पालन की वैज्ञानिक खेती शुरू की। वह केवीके वैज्ञानिको की देखरेख में गेहूं और रैपसीड सरसों के ट्रुथफुल्ली लेबल वाले बीज का उत्पादन भी करते हैं। भूमि की मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के लिए वह एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन से संबंधित तकनीकी जानकारी का उपयोग करते हैं। इस विधि को अपनाने से किसानों को विशेषकर फसलों एवं सब्जियों की गुणवत्ता में सुधार हो रहा है। वह आसपास के मार्जिनल किसानों के लिए रोजगार सृजन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मो. मुशर्रफ खलील जी को प्रतिवर्ष लगभग रु. 7,00,000 का शुद्ध लाभ प्राप्त हो रहा हैं। अपने उत्कृष्ट कार्य के लिए जिला स्तर एवं अन्य संस्थाओं से इन्हे सम्मानित किया गया है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली

प्रगतिशील किसान

श्री जगत कल्याण
रामपुर नौसाहन, हाजीपुर, वैशाली

अवशिश्स्त से विशिष्ट

श्री जगत कल्याण गाँव-रामपुर नौसाहन, प्रखण्ड- हाजीपुर, जिला-वैशाली के निवासी है। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक एवं संचार में इंजीनियरिंग किया है और मार्केटिंग एवं ऑपरेशन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा की है। वह एक किसान परिवार से है जो केले की खेती करते है।वैशाली जिला के किसान फल काटने के बाद केला के अपशिष्ट को सड़क के किनारे फेक देते है अथवा खेत में ही छोड़ देते है। उन्होंने पर्यावरण को सुरक्षित रखने एवं ग्रामीण लोगों के लिए रोजगार पैदा करने वाली तकनीकी पे काम करने की तीव्र इच्छा थी।फिर उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, वैशाली से तकनीकी सहयोग के संपर्क किया और उन्हें केला रेशा के विषय में जानकारी मिली।उसके बाद उन्होंने वर्ष 2022 में कृषि विज्ञान केंद्र, वैशाली के सहयोग से आर्या परियोजना के अंतर्गत तरुवर एग्रो इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना 7000 वर्ग फीट के क्षेत्र में की। वर्तमान में वह प्रति दिन विभिन्न गुणवत्ता के 2-3 टन केले के फाइबर का उत्पादन कर रहे हैं और। इसके अलावा, केला रेशा के अवशिष्ट से एवं रस से वर्मी-कम्पोस्ट का उत्पादन भी शुरू किया है। वह अपने उत्पाद दूसरे राज्यों में कपड़ा उद्योगों और सैनिटरी पैड बनाने वाली कंपनियों को बेचते हैं। उन्हें कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए वर्ष 2023 में ATARI के द्वारा ARYA क्षेत्रीय कार्यशाला में प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। श्री जगत कल्याण जी को इस व्यवसाय से सालाना ₹10.4 लाख का शुद्ध लाभ प्राप्त होता है। इन्होने अन्य ग्रामीण युवकों को इस उद्यम को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया है ।

कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली

प्रगतिशील किसान

श्रीमती संगीता कुमारी
रामपुर बखरा, लालगंज, वैशाली

ऑयस्टर मशरूम से मूल्य वर्धित उत्पाद

श्रीमती संगीता कुमारी, गाँव- रामपुर बखरा, प्रखण्ड- लालगंज, जिला-वैशाली की निवासी है। । अपने पति एवं तीन बच्चों के साथ खेती-बाड़ी करके जीवन यापन कर रही थी। कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, उन्होंने महिलाओं के उत्थान के लिए स्वयं सहायता समूह का गठन किया। समूह के माध्यम से उन्होंने ऑयस्टर मशरूम उत्पादन के साथ-साथ उन्होंने मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे की ऑयस्टर मशरूम चॉकलेट, भुजिया, बरी, कुकीज इत्यादि बनाने का काम शुरू किया और अपने उत्पाद को मेला के माध्यम से स्थानीय बाजारों में बेचना शुरू किया। उन्होंने जिला स्तरीय मेला एवं अन्य स्थान पर ऑयस्टर मशरूम उत्पादन एवं मूल्य वर्धित उत्पाद का प्रचार प्रसार किया जिससे उनके उत्पाद की बिक्री में बढ़ोतरी हुई । अपने समूह के माध्यम से 450 से अधिक महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं रोजगार प्रदान कर रही है। श्रीमती संगीता कुमारी को ऑयस्टर मशरूम उत्पादन एवं मूल्य वर्धित उत्पाद से प्रतिवर्ष लगभग रु. 12,25,000 का शुद्ध लाभ प्राप्त हो रहा हैं। अपने उत्कृष्ट कार्य के लिए जिला स्तर एवं अन्य संस्थाओं से इन्हे सम्मानित किया गया है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली

प्रगतिशील किसान

मीना देवी कुशवाहा
लोदीपुर, हाजीपुर, वैशाली

मशरूम से मूल्य वर्धित उत्पाद

श्रीमती मीना देवी कुशवाहा , गाँव-लोदीपुर, प्रखण्ड-हाजीपुर, जिला-वैशाली की निवासी है।अपने पति एवं तीन बच्चों के साथ खेती-बाड़ी करके जीवन यापन एवं बच्चों की पढ़ाई करा रही थी। कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, उन्होंने महिलाओं के उत्थान के लिए जीवन ज्योति स्वयं सहायता समूह का गठन किया, वह मीनालय मशरूम उत्पादक संगठन की संस्थापक भी है। समूह के माध्यम से उन्होंने मशरूम उत्पादन के साथ-साथ उन्होंने मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे की मशरूम पकोड़ा, भुजिया, अचार, कुकीज इत्यादि बनाने का काम शुरू किया और अपने उत्पाद को मेला के माध्यम से स्थानीय बाजारों में बेचना शुरू किया। उन्होंने जिला स्तरीय मेला एवं अन्य स्थान पर मशरूम उत्पादन एवं मूल्य वर्धित उत्पाद का प्रचार प्रसार लोकगीत के माध्यम से किया जिससे उनके उत्पाद की बिक्री में बढ़ोतरी हुई । इनकी पहचान जिले में मशरूम मैडम के नाम से प्रसिद्ध है। अपने समूह के माध्यम से 270 से अधिक महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं रोजगार प्रदान कर रही है। श्रीमती मीना देवी को मशरूम उत्पादन एवं मूल्य वर्धित उत्पाद से प्रतिवर्ष लगभग रु. 2,25,000 का शुद्ध लाभ प्राप्त हो रहा हैं। अपने उत्कृष्ट कार्य के लिए जिला स्तर एवं अन्य संस्थाओं से इन्हे सम्मानित किया गया है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली

प्रगतिशील किसान

श्री राजदेव राय
सरसई मुकुंदपुर, राजापाकर, वैशाली

बटेर पालन एक लाभकारी व्यवसाय

श्री राजदेव राय, गाँव- सरसई मुकुंदपुर, प्रखण्ड- राजापाकर, जिला-वैशाली के निवासी है। वर्ष 1998 में श्री राजदेव राय जी ने *प्रेम यूथ फाउंडेशन* नामक एनजीओ की स्थापना की। वर्ष 2008 में केंचुआ खाद के उत्पादन के लिए कृषि विज्ञान केंद्र, वैशाली से तकनीकी सहायता प्राप्त हुई। तत्पश्चात उन्होंने राजस्थान के भगवानपुर क्षेत्र के 35 किसानों को केंचुआ खाद से संबंधित प्रशिक्षण दिया तथा नाबार्ड द्वारा वित्त सहयोग के माध्यम से बागवानी मिशन के माध्यम से 30 मीट्रिक टन / 60 मीट्रिक टन प्रति वर्ष शमता केंचुआ खाद का उत्पादन शुरू करवाया। 2011 में इनके द्वार 110 किसानों को बटेर पालन विषय पर प्रशिक्षित किया और बटेर उत्पादन शुरू किया। वर्तमान में उनके पास 60,000/माह बटेर का चूजा वाली हैचरी यूनिट है। इनके पास हैचरी यूनिट, ब्रूडर रूम (शमता : 60,000) और मदर यूनिट (10,000) हैं । इनके द्वार बटेर के चूजा की बिक्री बिहार राज्य के अलावा अन्य राज्यो जैसे यूपी, एमपी, उड़ीसा, असम में की जाती है । 2014 में *शांति फीड एवं जापानी बटेर व्यापारियों* का पंजीकरण किया। इनके द्वार वैशाली जिले के 200 ग्रामीण युवाओं को वर्मीकम्पोस्ट, बटेर पालन और मशरूम से संबंधित उद्यमी बनाया गया है । श्री राजदेव राय जी को इस व्यवसाय से सालाना ₹24.4 लाख का शुद्ध लाभ प्राप्त होता है।

अपने उत्कृष्ट कार्य के लिए आरपीसीएयू, पूसा द्वार अभिनव किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया एवं जिला स्तर एवं अन्य संस्थाओं से इन्हे सम्मानित किया गया है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली

प्रगतिशील किसान

श्री संजीव कुमार
चकवारा, हाजीपुर, वैशाली

ग्रीन सीड हाउस

श्री संजीव कुमार, गाँव-चकवारा, प्रखण्ड- हाजीपुर, जिला-वैशाली के निवासी है। श्री संजीव कुमार फूलगोभी और अन्य सब्जियों के बीजों का उत्पादन करते हैं । उनके द्वारा जिला के अन्य किसानों को प्रशिक्षित किया जाता है और इस बीज उत्पादन के उद्यम को अपनाने के लिए उत्साहित करते हैं । उन्होंने अन्नदाता कृषक क्लब एनजीओ का गठन किया। उनके द्वारा 11 राज्य जैसे बिहार झारखंड उडीसा मध्य प्रदेश एवं अन्य राज्यों में फूलगोभी उत्पादन वाले क्षेत्र में 20 जिलों के साथ बीजों का विपणन स्थापित किया है । उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र, वैशाली के सहयोग से आईपीएम एवं आईडीएम तकनीकियों का इस्तेमाल फूलगोभी के बीज उत्पादन में किया है। उन्होंने संजीव वैरायटी को विकसित किया है। उनके द्वारा वर्ष 2014 में ग्रीन सीड कंपनी की स्थापना की । उनके द्वारा सालाना 300 फूलगोभी के बीज का उत्पादन किया जाता है।उन्हें कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए वर्ष 2014 में डॉ राजेंद्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय पूसा के द्वारा अभिनव किसान पुरस्कार एवं वर्ष 2017 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान पूसा के द्वारा जगजीवन राम अभिनव किसान पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्हें वर्ष 2019 में ग्रास रूट इन्नोवेटिव अवार्ड 2019 से माननीय राष्ट्रपति के द्वारा सम्मानित किया गया। श्री संजीव कुमार जी को इस व्यवसाय से सालाना 20 लाख रुपया का शुद्ध लाभ प्राप्त होता है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली

प्रगतिशील किसान

श्री शंकर चौधरी
जदुआ बरई टोला, हाजीपुर, वैशाली

उद्यान रतन, राष्ट्रीय कंस्य पादक सम्मनित

श्री शंकर चौधरी, गाँव- जदुआ बरई टोला, प्रखण्ड- हाजीपुर, जिला-वैशाली की निवासी है। इन्होनें ओल की खेती की शुरूआत वर्ष 1995 में की। वैशाली जिले के किसानों को प्रशिक्षण देकर ओल की खेती को बढ़ावा दे रहे हैं। स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को प्रशिक्षित करते है । अन्य जिला स्तर के संस्थानों में प्रशिक्षक के तौर पर काम करते है । इनके द्वार 56 प्रकार के ओल के व्यंजनों की (मिठाई, लाड्डू, हलवा, सूप, चाय, इत्यादि) की रेसिपी तैयार की गयी है। जिला स्तारिय मेला एवं अन्य राज्य में स्टॉल लगाते हैं। श्री शंकर चौधरी जी को वैशाली जिले के साथ-साथ अन्य राज्यों में ओल चौधरी के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा हल्दी, अदरक, एवं जड़ी बूटी का भी उत्पादन करते हैं। इन्होनें महिलाओं को आत्मनिर्भर स्वयं रोजगार करने के लिए प्रशिक्षण दिया है । ओल चालीसा के नाम से पैम्फलेट प्रकाशित किया है जिसमें ओल की खेती, एवं उसके आयुर्वेदिक गुण के व्याख्या की गई है। अपने उत्कृष्ट कार्य के लिए जिला स्तर एवं अन्य संस्थाओं से इन्हे सम्मानित किया गया है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली

प्रगतिशील किसान

प्रभु दयाल सिंह
फरीदपुर, राजापाकर, वैशाली

इको फ्रेंडली फार्मिंग

श्री प्रभु दयाल सिंह, गाँव- फरीदपुर, प्रखण्ड- राजापाकर, जिला-वैशाली के निवासी है। । कृषि विज्ञान केंद्र वैशाली से प्रशिक्षण लेने के बाद, उन्होंने "प्रगति शील कृषक हित समूह" की स्थापना की। केवीके, ATMA और कृषि विभागों के वैज्ञानिक और क्लब के सदस्य कृषि संबंधी समस्याओं के समाधान और चर्चा के लिए समय- समय पर आयोजित बैठकों में भाग लेते हैं। सब्जी फसलों में प्राकृतिक नेचुरल मल्चेस सामग्री (धान की भूसी, केले के पत्ते, सागौन के पत्ते, आम और लीची के पत्ते) का उपयोग करते है । वह प्राकृतिक खेती कर रहे हैं, जहां देसी गाय और प्रकृति से प्राप्त सभी उत्पादों का उपयोग करके खेती की जाती है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और इससे प्राप्त उत्पादों को बाजार में अच्छी कीमत मिलती है। उन्होंने व्यापक रूप से उन्नत प्रौद्योगिकियों को अपनाया जैसे- वायवीय प्लांटर के माध्यम से मक्का की बुआई, उच्च घनत्व वाले बगीचे में स्प्रिंकलर और ड्रिप सिंचाई और अन्य किसानों को भी इस प्रणाली को अपनाने के लिए प्रेरित किया है। विशेष रूप से उच्च घनत्व वाली भिंडी की खेती के लिए जाने जाते है। अपने उत्कृष्ट कार्य के लिए जिला स्तर एवं अन्य संस्थाओं से इन्हे सम्मानित किया गया है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, वैशाली

प्रगतिशील किसान

राजीव कुमार रंजन
भागवतपुर पतेर्हा, हाजीपुर, वैशाली

बटन मशरूम खाद के मुख्य सप्लायर

श्री राजीव कुमार रंजन, गाँव- भागवतपुर पतेर्हा, प्रखण्ड-हाजीपुर, जिला-वैशाली के निवासी है। । टेट्रा पैक में सर्विस इंजीनियर के रूप में कार्यरत श्री राजीव जी ने कृषि कार्य की देखभाल के लिए नौकरी छोड़ दी। । इन्होंने एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाकर शुरुआत की और किसान पाठशाला का आयोजन करके किसानों को प्रशिक्षित किया। इन्होंने उन्नत किस्म के बीजों, कृषि प्रौद्योगिकी, एकीकृत कीट प्रबंधन के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए सेमिनार भी आयोजित किए और एक वर्मोकम्पोस्टिंग इकाई की स्थापना की। वह कृषि विज्ञान केंद्र वैशाली, मशरूम अनुसंधान निदेशालय, सोलन, डीआरपीसीएयू, पूसा जैसे विभिन्न केंद्रों से प्रशिक्षण प्राप्त कर निर्मला मशरूम फार्म की स्थापना की । बटन मशरुम कम्पोस्ट , बटन मशरुम उत्पादन के साथ-साथ इन्होंने मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे की बटन मशरूम चॉकलेट, भुजिया, बरी, कुकीज, पकोरा, सत्तू इत्यादि बनाने का काम शुरू किया और अपने उत्पाद को मेला के माध्यम से स्थानीय बाजारों में बेचना शुरू किया । अपने उत्कृष्ट कार्य के लिए जिला स्तर एवं अन्य संस्थाओं से इन्हे सम्मानित किया गया है।

SCAN ME

TO GET OUR LOCATION

कृषि विज्ञान केन्द्र हरिहरपुर, वैशाली

के बढ़ते कदम...

Rpcau Kvk Vaishali | @Kvkvaishali | rpcaukvkvaishali | vaishali.kvk.4.in | www.rpcau.ac.in